शिष्य धर्म

- जो शिष्य **गुरू तत्व** के रहस्य को नहीं जान पाता वह **पूर्णता** प्राप्त नहीं कर सकता। अत: शिष्य को चाहिये कि वह गुरू तत्व को समझे। उसमें ही जीवन की **सार्थकता** है।
- शिष्य को सदैव गुरू का ध्यान उसी प्रकार करना चाहिये जिस प्रकार एक **पतिव्रता स्त्री** केवल अपने पति का चिंतन करती है।
- शिष्य को चाहिये कि **प्रसन्न मन** से श्रद्धा पूर्वक **गुरू** को ही, अपना परम लक्ष्य बना ले। इसी माध्यम से वह सौभाग्यशाली बन सकता है।
- जब शिष्य **'स्व'** को समाप्त कर देता है तो उसके हृदय में **गुरू ज्ञान** का **दीपक** प्रज्वलित हो उठता है।
- शिष्य के समस्त **पाप जनित विघ्नों** को समाप्त करने के कारण **गुरू शिव स्वरूप** हैं। शिष्य को हरदम ऐसा ही चिन्तन करना चाहिये।
- जो शिष्य **पूर्ण श्रद्धा** के साथ **गुरू चरणों** का जल अपने ऊपर छिड़कता है या चरणामृत के रूप में ग्रहण करता है उसे संसार के समस्त तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त हो जाता है।
- **गुरू शब्द** का उच्चारण करना ही जीवन की पूर्णता मानी गयी है।
- जो **सद्गुरू** की **श्रद्धा पूर्वक आराधना** करता है उसने जीवन में भले ही कितने ही **पाप** किये हों, धीरे-धीरे वे **समाप्त** हो जाते हैं।
- शिष्य के लिये **गुरू** का रूप समस्त **देवताओं** में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ही अज्ञान को हटाकर पूर्ण ज्ञान देने में समर्थ हैं।
- **शिष्य** पूरी **श्रद्धा से गुरू की सेवा** में रत रहता है क्योंकि उसी **माध्यम** से वह **आध्यात्मिक** और **भौतिक सुख** की प्राप्ति करता है।
- **गुरूतत्व** विशुद्ध रहस्यमय **ज्ञान** है। इसे प्राप्त करने के लिये शिष्य का मन **पावन** और **निर्मल** होना चाहिये।